Apex Journal of Innovative Research (AJIR)
ISSN-2584 –1440, Volume-1, Issue-1
July-September 2023 Pages-07-10

"रामचरित मानस में आदिवासी समाज"

डॉ वीणा छंगाणी

***Abstract*— तुलसीदास भक्तिकाल की राम भक्त काव्य के मुख्य कवि है। तुलसी ने रामचरितमानस के माध्यम से भगवान श्रीराम की भक्ति को जग दीप्तिमान् किया है। तुलसी साहित्य का उद्देश्य केवल राम भक्ति जागृत करना ही नहीं है वह सामाजिक चेतना को भी प्रसारित करता है। तुलसी का सामाजिक और लोकमंगल परिपेक्ष्य मध्यकाल के अन्य कवियों से बहुत ज्यादा व्यापक और गहरा है। तुलसी दास जी उस युग से थे जब सामंती मूल्यों का बोल बाला था। वर्ण–व्यवस्था का कठोरता से पालन होता था। उस सामंती समाज के काल में तुलसी दासजी सामान्य जन के लिए नए मापदंडों की संरचना करने का प्रयास कर रहे थे। उन्होनें वर्ण–व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया साथ ही कर्तव्य पथ को छोड़ देने जाने वाले ब्राह्मणों की भी काफ़ी आलोचना की ।**

मानवता से स्नेह, तुलसी का संदेश है । इसीलिए उन्होंने अपने समय में व्याप्त वातावरण से हताश होकर मर्यादापुरूषोत्तम राम का आदर्श , उनसे सम्बन्धित परिवार जन का आदर्श सामान्य जन के समक्ष प्रस्तुत किया। अपने साहित्य के माध्यम से वह चाहते थे कि देश और समाज में प्रचलित दुर्भावना दूर हो और एक नवीन चेतना का संचार हो।

मुख्य शब्द:- रामचरितमानस, वर्ण–व्यवस्था

I. रामचरितमानस और आदिवासी समाज

तुलसीदास कृत रामचरितमानस में वर्णित आदिवासी समाज अपना अलग ही स्थान रखता है । रामचरितमानस आम जनता का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है और अगर इसका वास्तविक स्वस्प देखना हो तो राम की कहानी जब अयोध्या से हटकर वन की ओर जाती है तब दिखाई देता हैद्य तुलसीदास जी ने आदिवासी समाज का वर्णन बहुत खूबी से किया है लेकिन साथ ही इस बात का ध्यान रखा है कि राम के प्रति उनकी भक्ति निरंतर बनी रहे इसलिए आदिवासी समाज के जो भी चित्र रामचरित मानस में वर्णित हुए हैं वे सभी दिल की गहराई तक उतर जाते हैं। हृदयं अवध सिरु नाईद्य " इसी तरह राम दृ सीता की कहानी गांव की महिलाओं की प्रतिक्रियाओं से गुजरती हुई सामान्य जन तक पहुंचती है और आदिवासी जनजातीय, वनवासियों , आश्रम वासियों और पशु पक्षियों के बीच वन की संस्कृति को साथ लिए एक विशेष मानवीय रिश्ता जोडती हुई आगे बढ़ती है द्य वन में श्री राम का पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ जीवन चक्र शुरू होता है जो ज्यादातर समय आदिवासी समाज के बीच व्यतीत होता है । यहां एक दूसरे के प्रति सदभावना और समानता का अधिकार दृष्टिगोचर होता है राम ने वन की ओर प्रस्थान किया ही सत्य, शील, मर्यादा की रक्षा के लिये था–

**"निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह।।"**

डॉ वीणा छंगाणी , अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

भावार्थ : श्री रामजी ने अपनी भुजा उठाकर प्रण किया कि मैं पृथ्वी को राक्षसों से विहीन कर दूंगा। फिर उन्होनें समस्त मुनियों के आश्रमों में जाकर उनको (दर्शन एवं सम्भाषण का) सुख दिया।। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार" तुलसी का मुख्य उद्देश्य'एक आदर्श व्यक्ति की कल्पना है'। समाज के पिछड़े वर्ग, हीन, निराश, असहाय जनसमुदाय के बीच विभाजित जातियों–उपजातियों के मंगल के लिए राम की यात्रा प्रारम्भ होती है।।" राम सीता–लक्ष्मण सचिव के साथ सबसे पहले धंगवेरपुर (गवेरपुर लखनऊ रोड पर प्रयागराज से करीब 50 किलोमीटर दूर यह धार्मिक स्थान है। लोककथाओं की माने तो यही वह जगह है जहाँ राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ गंगा नदी को पार किया था) में उनका सब से पहले परिचय गुह निषाद से होता है। रामदृसीता के आने का समाचार सुनते ही ग्रामजन की प्रतिक्रियाएं हैं–

"ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठए बन बालक ऐसे।।

भावार्थ: राम, लक्ष्मण और सीता के रूप को देखकर गाँव की स्त्रियां बात करती हैं कि हे सखी! इनके माता पिता कैसे है जिन्होंने इतने कोमल बालकों को जंगल भेजा है।

राम यदि पृथ्वी पर शयन करते हैं तो आदिवासी कहते हैं **"भयउ प्रेमवश हृदय विषादू"** । ये निश्चय ही बन के योग्य नहीं है पर **'करम प्रधान सत्य कहूं लोगू।"**

श्री राम अपने सचिव सुमंत को पुनः अयोध्या लौटा देते हैं और स्वयं गंगा के तट आते हैं और गंगा पार जाने के लिए केवट से नाव मांगते हैं श्री राम बड़े ही सरलता से और सहजता से केवट को कहते हैं –

**"एहिं प्रतिपालउ सबु परिवारु।
नहि जानउ कछु अउर कबारु।।
जो प्रभुपार अवसि गा चहू।
मोहि पद पदुम पखाग्न कहहु।।"**

भावार्थ:– केवट कहते हैं कि मैं अपने सारे परिवार का लालन पोषण इसी नाव के आधार पर करता हूं मुझे इसके अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं आता अगर बहुत ज्यादा जरूरी हो तो मैं आपके चरण कमल को पखार कर अर्थात धोकर नाव में ले जा सकता हूं।

केवट श्री राम के पैरों को धोए बिना अपने नाव में नहीं बिठाना चाहते वे इसके बदले कुछ लेना भी नहीं चाहते उनकी तो बस एक ही कामना है।

**"अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥"**

भावार्थ

हे नाथ ! हे दीनदयाल ! आपकी कृपा से मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। जब आप वापस आयेंगे तब आप मुझे जो भी देंगे, मैं उसे आपका प्रसाद समझ कर सिर पर धारण करूंगा।

केवट आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं डॉ रमेश कुंतल मेघ अपनी पुस्तक में केवट को रामचरितमानस का सर्वाधिक यथार्थ पात्र माना है वह कहते हैं कि "केवट एक सीधा–साधा अलौकिक चमत्कारों में विश्वास करने वाला तथा अपने स्वामी का गंवार और चाकर मात्र है जिसकी समस्याएं मात्र पत्नी तथा बच्चों के पेट पालने की है"

राम जब भारद्वाज ऋषि के आश्रम में आते हैं और वनवासियों के समुदाय से मिलते हैं तो सभी को जैसे नयन फल प्राप्त हो जाता है –

"राम लखन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि जाई।।

भावार्थः–

राम, लक्ष्मण और सीताजी की सुंदर प्रेम से भरी वाणी का मोल नहीं है, वह कैसे कही जा सकती है?

"खग मृग मगन देखि छबि होहीं। लिए चोरि चित राम बटोहीं।।"

भावार्थः– पक्षी और पशु भी उस छबि को देखकर प्रेम के आनन्द में मग्न हो जाते हैं। पथिक रूप रामचन्द्रजी के रूप ने सभी के चित्त को चुरा लिया हैं।।

श्री राम वाल्मीकि के निर्देशानुसार जब चित्रकूट पहुंचते हैं तो तुलसीदास जी ने वहां आदिवासी समाज की उपस्थिति का वर्णन किया है–

"यह सुधि कोल किरातन्ह पाई। हरषे जनु नव निधि घर आई ll
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना।।"

भावार्थः– रामजी के आने का समाचार जब कोल–भीलों ने पाया, तो वे ऐसे आनन्दित हुए मानो नवों निधियाँ स्वयं चल कर उनके घर ही पर आ गई हों। वे दोनों में कंद, मूल, फल भर–भरकर चले, दृश्य ऐसा था मानो कोई दरिद्र सोना लूटने चले हों। इसी तरह वन का आदिवासी समाज राम जी को आया देखता हैं तो उनके आगे भेंट रखकर प्रणाम करता हैं और अत्यन्त प्रेम के साथ राम जी को देखता हैं। सभी मंत्र मुग्ध हो कर जहाँ के तहाँ मानो चित्र लिखे से खड़े रह जाते हैं। उनके शरीर पुलकित हो उठते हैं और नेत्रों में प्रेम से परिपूर्ण आसूंदृजल की बाढ़ आ रही है।

"करहिं जोहारु भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे।।
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े। पुलक सरीर नयन जल बाढ़े।।"

वनवासी समाज प्रभु को पाकर निहाल हो गए उनको लगता है हमारा भाग्य विशेष है जो रामजी का आगमन हुआ–

"अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय।
भाग हमारें आगमनु राउर कोसलराय।।"

राम के वन में आगमन पर मानव ही नहीं प्रकृति भी बहुत प्रसन्न है।

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में उस समय की वर्ण व्यवस्था का वर्णन किया है। उनके अनुसार ब्राह्मण का प्रभुत्व है। समाज चार वर्णों में विभाजित है। तुलसीदास ने जातीय भेदभाव का निषेध ही किया है निषाद निम्न वर्णीय माने जाते थे जो राम ने साथ उपस्थित रहे दृमुनीवर भी उनका परिचय राम के मित्र के रूप में करवाते हैं–

"राम सखा सुनि संदनु त्यागा। चले उचरि उमगत अनुरागा।।
गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई। कीन्ह जोहारु माथ महि लाई।।"

भावार्थ

यह श्री राम का मित्र है, इतना सुनते ही भरतजी ने रथ छोड़ दिया। वे रथ से उतरकर प्रेम से परिपूर्ण हो चले। निषादराज गुह ने अपना ग्राम, जाति और नाम सुनाकर धरती पर माथा टेक प्रणाम किया। तुलसी दास जी ने भरत और निषाद की तुलना भारतदृलक्ष्मण मिलन से की है । कहाँ अयोध्या के राजकुमार और कहाँ दलित निषाद। राजा और प्रजा का ऐसा मिलन अनूठा हैं। तुलसी ने रामचरित मानस में गुह को सभी से मिलाया है यही नहीं वन में जब कोल किरात राम को जब भरत के आने की सूचना देते हैं दूसरी तरफ केवट भरत को राम के स्थान का पता बताते हैं।

"मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटेउ राम।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम।।"

भावार्थ

फिर श्री रामजी प्रेम के साथ शत्रुघ्न से मिलने के बाद केवट से मिले।

प्रणाम करते हुए लक्ष्मणजी से भरतजी बड़े ही प्रेम से मिले। तुलसी दास जी ने तत्कालीन समाज की दूषित वर्ण व्यवस्था को भी नकारा है और इसके लिए उन्होंने उपयुक्त उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैंदृ

अयोध्या का राजर्षि समाज राम को मनाने के लिए आया हुआ है और वनवासी समाज भी वहां उपस्थित है कंद फल फूल लेकर स्वागत के लिए तैयार है–

"कोल किरात भिल्ल बनबासी। मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी।।
भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी।।"

भावार्थ

कोल, किरात और भील आदि जो वन के निवासी हैं वे पवित्र रूचिपूर्ण दिखने में सुन्दर और स्वाद में अमृत के समान शहद को सुंदर पत्ते के दोनो में सजा कर उसमें कंद, मूल, फल और अंकुर आदि लाते हैं और इसके बदले उन्हें कोई चाहत नहीं है विनम्र भाव से कहते हैं–

**"कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी।।
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसनु राम प्रसादा।।"**

अर्थः स्नेह से परिपूर्ण कोमल वाणी से कहते हैं कि साधु लोग प्रेम को पहचानकर उसका सम्मान करते हैं (अर्थात आप साधु हैं, आप हमारे प्रेम को देखिए, दाम देकर या वस्तुएँ लौटाकर हमारे प्रेम का तिरस्कार न कीजिए) । आप तो पुण्यात्मा हैं, हम नीच निषाद हैं। श्री रामजी की कृपा से ही हमने आप लोगों के दर्शन पाए हैं।

आदिवासी समाज राम की विषम और कठिन परिस्थितियों में हमेशा उनके साथ रहे हैं . अनेक कठिनाई और संघर्ष भरे जीवन का उल्लेख राम अवधपुरी में वन गमन के समय सीता के सम्मुख कर रहे हैं

**"काननु कठिन भयंकर भारी।
घोर घामु हिम वारि बयारी।।
कुस कन्टक मग कां कर नाना।
चलब पयादेहि बिनु पद त्राना।।"**

कठिन परिस्थितियों का सामना करने वाला आदिवासी समाज अपनी दीन–हीन दशा पर अत्यंत दुखी भी है–

"यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिं न बासन बसन चोराई।। हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती।।"

भावार्थ

हमारी तो यही बड़ी भारी सेवा है कि हम आपके कपड़े और बर्तन नहीं चुराते । हम लोग जड़ जीव हैं, जीवों की हिंसा करने वाले हैं, कुटिल, कुचाली, कुबुद्धि और कुजाति हैं।

तुलसीदास जी ने रामचरित्र के माध्यम से वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है इसके लिए हमें शबरी प्रसंग को ध्यान में रखना होगा। राम स्वयं शबरी के आश्रम में जाते हैं और उनका आथित्य ग्रहण करते हैं उनके झूठे बेर भी खाते हैं यह लगभग वैसा ही है जैसा कृष्ण के विदुर के पास जाना। शबरी के बारे में ऐसा कहा जाता है कि वह सबर नाम की आदिवासी जनजाति की थी। वह अपना परिचय देती हुई कहती है–

**"केहि विधि अस्तुति करों तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी।।
अधमते अधम अधम अति नारि । तिन्ह मह मै मतिमन्द गंवारी।।"**

इस प्रकार श्री राम अस्पृश्य शबरी का अतिथि बनते हैं। तुलसीदास जी ने शबरी के मुख से उस समय की वर्ण व्यवस्था का चित्र प्रस्तुत करते हुए अपनी भक्ति की शक्ति से उस पर प्रहार किया है। वह उसे समाप्त करना चाहते हैं। राम के मुख से कहलाते हैं–

**"कहु रघुपति सुनि भामिनि बाता , मानौ एक भगति का नाता।
जाति पाति कुल धरम बड़ाई धनबल, परिजन गुन चतुराई।
भगति हीन नर सोहे कैसे , बिनु जल वारिद देखिय जैसे।"**

वर्णभेद व लिंगभेद पर प्रहार करते हुए तुलसीदास जी ने श्री रामचन्द्रजी के माध्यम से यह भी सपष्ट किया है कि यदि कोई मनुष्य जातिपाति, कुल, वंश, धनदृबल, गुण और चातुर्य से परिपूर्ण हो परन्तु भावना और भक्ति से परे है तो वह उनका परम भक्त नहीं होगा।

भक्ति का धरातल सबके लिए एक जैसा है यहां पर जातिदृपाति, कुलदृ धर्म ,धनदृ बल आदि के लिए कोई भी स्थान नहीं रह जाता स बिना भक्ति के मनुष्य की स्थिति ठीक वैसी होगी जैसे कोई बादल बिना जल के हो।

रामचरितमानस के माध्यम से तुलसीदास जी ने स्पष्ट किया है कि इस संसार में केवल एक ही जाति है और वह है भक्त की। इस बात को तुलसीदास जी ही नहीं करीबन सभी कवियों ने स्वीकार किया है।

"जाति पाति पूछे नहीं कोई हरि को भेज सो हरी का होई"

मानस में श्री रामचंद्र जी ने शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया जिसका वर्णन श्रीरामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में है। शबरी ने जब राम जी से पूछा कि मैं तो नीच, अधम, मंदबुद्धि हूँ, मैं भला किस प्रकार आपकी स्तुति कर सकती हूं? तब श्री राम ने उनकी जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहा कि मैं केवल भक्ति का संबंध मानता हूँ। तुलसीदास जी शबरी को संबोधित करवा कर राम के मुख से कहते हैं–

**"नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसर रति मम कथा प्रसंगा।।"**

अर्थात् :– मैं अब तुम्हारे सामने अपनी नवधा भक्ति कहता हूं। तुम उसे सावधानी से सुनना और अपने मन में धारण करना। पहली भक्ति संतों का सत्संग है। दूसरी भक्ति है मेरी कथा के प्रसंग में प्रेम करना है।

**"गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान।।"**

अर्थात् अभिमान को त्याग कर गुरु के चरण रूपी कमल की सेवा तीसरी भक्ति कहलाती है। चौथी भक्ति कपट को छोड़कर राम के गुणों का गान करना हैं यानी तीसरी भक्ति चरण सेवा और चौथी कीर्तन भक्ति।

**"मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा।।
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा।।**

अर्थात राम मंत्र का जाप और दृढ़ विश्वास– यह पाँचवीं भक्ति है, जो वेदों में प्रकाशमान है। छठी भक्ति है इंद्रियों का निग्रह, शील यानी अच्छा स्वभाव या चरित्र, बहुत से कार्यों से वैराग्य और निरंतर संत पुरुषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना।

"सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा।।
आठवँ जथा लाभ संतोषा । सपनेहुँ नहिं देखड़ परदोषा।।"

अर्थात् :– सातवीं भक्ति है संसार को समभाव से राममय देखना और संतों को मुझसे भी यानी राम से भी अधिक मानना। आठवीं भक्ति है जो मिले, उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी दूसरे के दोषों को न देखना –

"नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियँ हरष न दीना।।
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।।"

अर्थात् :– सबके साथ सरलता और कपटरहित बर्ताव करना, नवीं भक्ति है हृदय में मेरा विश्वास रखना और किसी भी स्थिती में हर्ष और विषाद का भाव न होना। यदि इन नवों भक्ति में से जिनके पास एक भी होती है, वह स्त्री या पुरुष, जड़ या चेतन कोई भी हो–

"सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें।।
जोगि बूंद दुरलभ गति जोई। तो कहूँ आजु सुलभ भइ सोई।।"

अर्थात् :– हे भामिनि! मुझे वही सबसे ज्यादा प्रिय है। फिर आप में तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है। अतएव जो गति योगियों को भी दुर्लभ है, वही आज आपके लिए सुलभ हो गई है।

आदिवासी समाज को हमेशा दीनदृहीन रूप में प्रस्तुत किया जाता है कई बार यह प्रश्न उठता है कि रामचरितमानस के आदिवासी समाज क्या ऐसे दीनदृहीन भाव से ग्रसित है? पर ऐसा बिल्कुल नहीं है राम के प्रति समर्पित आदिवासी समाज भक्ति से परिचालित है वह राम के प्रति पूर्णरूप समर्पित है। आचार्य शुक्ल का कथन है 'शुद्र शब्द को नीची श्रेणी के मनुष्य का कुल, शील, विधा, बुद्धि, शक्ति आदि सब में अत्यन्त न्यून का बोधक मानना चाहिये । इतनी न्यूनताओं को अलग– अलग न लिखकर वर्ण विभाग के आधार पर उन सबके लिये एक शब्द का व्यवहार किया गया है।"

राम की वानर सेना और आदिवासी समाज में समानता भी है । वानर सेना में युद्ध की कला जिसमें वे कभी पत्थरों से तो कभी पेड़ो की डालियों से आक्रमण करते हैं वैसी ही हैं जैसी आदिवासी समाज करता की है। रामचरितमानस में सेवा भाव का जो वर्णन आया है उसमें आदिवासी समाज की झलक देखी जा सकती हैं।

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि राम भक्त तुलसीदास ने श्री राम को सामंती महलों से निकालकर वन खंड में पहुंचाया और आदिवासी समाज के मध्य राम सीता लक्ष्मण को स्थापित किया। राम सीता लक्ष्मण के माध्यम से वर्ग भेद आश्रम व्यवस्था उसे समय प्रचलित कुरीतियों का पर्दाफाश कर आपस में मानवीय संबंध स्थापित करके सामान्य जन में एक भाव को स्थापित किया। वानर ,पक्षी से लेकर आदिवासी समाज सभी राम की वन में सीता की खोज और रावण युद्ध तक निरंतर सहायक हैं और उनका यह संबंध सदैव कायम है जो मानवीय भी है और भक्ति से परिपूर्ण भी है।

संदर्भ ग्रन्थः–

1 तुलसी दास कृत रामचरितमानस
2 वाजपेयी आचार्थ नंददुलारेः हिंदी साहित्य बीसवीं शताब्दी
3 मेघ डॉ रमेश कुन्तलः तुलसी आधुनिक वातायन
4 शुक्ल रामचंद्रः तुलसीदास